Eo – भविष्यद्वक्ता योना का चिन्ह मत्ती १२:३८-४१ | 1

– Save This Page as a PDF–

भविष्यद्वक्ता योना का चिन्ह

मत्ती १२:३८-४१

खोदाई: आपको क्या लगता है कि फरीसी चमत्कार क्यों देखना चाहते थे? यीशु इस पीढ़ी के बारे में कैसा महसूस करते हैं? क्यों? योना का चिन्ह क्या है? येशु योना से कैसे महान है? फरीसियों ने इसकी व्याख्या कैसे की होगी?

चिंतन: क्या आपने कभी परमेश्वर से कोई संकेत मांगा है? क्या यह बाइबिल आधारित है? क्या यहोवा की रचना और एक चिन्ह के बीच कोई अंतर है? हमें अनुरूपता कहाँ से मिलती है?

पवित्र आत्मा की निंदा करने के लिए मसीह की फटकार और फैसले के शब्दों को सुनने के बाद, कुछ फरीसियों और टोरा-शिक्षकों (देखें Co – यीशु क्षमा करता है और एक लकवाग्रस्त आदमी को ठीक करता है) ने उससे यह कहकर आक्रामक रुख अपनाने की कोशिश की, “गुरु, हम चाहते हैं अपनी ओर से एक चिन्ह देखो” (मत्ती १२:३८)। उन्होंने प्रभु की कटु निंदा का उत्तर उनसे एक सतही सम्मानजनक प्रश्न पूछकर दिया, जिससे संकेत मिलता है कि वे अपनी जीभ काट रहे थे, मानो उस पर हमला करने का सबसे अच्छा समय आने तक सभ्यता का आभास देने के लिए दृढ़ थे।

गलील के रब्बी ने स्पष्ट रूप से उन्हें संकेत देने से इनकार कर दिया, लेकिन उन्हें तानाख में दो घटनाओं के बारे में बताया। पहली घटना भविष्यवक्ता योना का वृत्तांत है जो एक व्हेल द्वारा निगल लिए जाने के बाद मृतकों में से जीवित हो गया था (योना पर मेरी टिप्पणी देखें Ar – प्रभु ने योना को निगलने के लिए एक महान व्हेल तैयार की थी)। दूसरी घटना जिसका उल्लेख यीशु ने किया वह सुलैमान की चिंता है (देखें Ep – दक्षिण की रानी इस पीढ़ी के साथ उठेगी और इसकी निंदा करेगी)। यीशु योना से और सुलैमान से भी महान था। शीबा की रानी ने सुलैमान के बारे में सुना और उसका ज्ञान सुनने के लिए पृथ्वी के छोर से यात्रा की। और फिर भी मसीहा स्वर्ग से आया था, लेकिन फरीसियों और टोरा-शिक्षकों ने उसकी बात नहीं मानी।

फरीसियों और टोरा-शिक्षकों ने अपनी पार्टी के बाहर के किसी भी व्यक्ति को उन्हें कुछ भी सिखाने के योग्य नहीं माना। इसलिए जब उन्होंने येशुआ को शिक्षक कहकर संबोधित किया, तो उनकी प्रतिक्रिया व्यंग्यात्मक और पाखंडी दोनों थी। यह व्यंग्यात्मक था क्योंकि वे नाज़रीन को एक विधर्मी और निन्दा करने वाला मानते थे, और केवल उसे एक झूठे शिक्षक के रूप में उजागर करने का रास्ता खोज रहे थे। यह

Eo – भविष्यद्वक्ता योना का चिन्ह मत्ती १२:३८-४१ | 2

पाखंड था क्योंकि उन्होंने भीड़ के सामने उसका मज़ाक उड़ाया।

वे किस प्रकार का संकेत चाहते थे, यह निर्दिष्ट नहीं किया गया था, लेकिन यह बहुत ही प्रभावशाली रहा होगा, संभवतः विश्वव्यापी परिमाण पर कुछ। चमत्कार करने वाला रब्बी पहले ही तीन मसीहाई चमत्कार कर चुका था (यशायाह पर मेरी टिप्पणी देखें Gl – मसीहा की तीन चमत्कार)। लेकिन वे इससे भी बड़े पैमाने पर और अधिक चाहते थे।

रब्बी सिखाते हैं कि एलिज़ार नाम के एक रब्बी को पढ़ाने के उसके अधिकार के बारे में चुनौती दी गई थी। कहा जाता है कि अपनी योग्यता साबित करने के लिए उन्होंने एक टिड्डे के पेड़ को ३०० हाथ तक हिलाया और पानी की धारा को पीछे की ओर प्रवाहित किया। जब उसने किसी इमारत की दीवार को आगे की ओर झुका दिया, तो उसे दूसरे रब्बी के कहने पर ही सीधा खड़ा किया गया। अंत में, एलीएज़ार ने चिल्लाकर कहा, “यदि टोरा वैसा ही है जैसा मैं सिखाता हूँ, तो इसे स्वर्ग से सिद्ध किया जाए।” उसी समय (जैसा कि कहानी कहती है), आकाश से एक आवाज़ आई, “तुम्हें रब्बी एलीज़ार से क्या लेना-देना है? निर्देश वैसा ही है जैसा वह सिखाते हैं।”

ऐसा नहीं था कि फरीसियों और टोरा-शिक्षकों को वास्तव में येशु से ऐसे किसी संकेत के प्रदर्शन की उम्मीद थी क्योंकि उनका उद्देश्य यह साबित करना था कि वह ऐसा कुछ नहीं कर सकता और इस तरह लोगों की नज़रों में उसे बदनाम करना था। यद्यपि तानाख में किसी भी भविष्यवाणी ने कभी भी यह नहीं बताया कि मेशियाक उनकी मांग के अनुसार एक संकेत देगा, यहूदी नेताओं ने लोगों को यह आभास दिया कि ऐसा हुआ।

मनमौजी रब्बी ने सबसे पहले यह घोषणा करके उनकी व्यंग्यात्मक चुनौती का जवाब दिया कि यह तथ्य कि वे एक संकेत मांग रहे थे, उनकी दुष्ट और व्यभिचारी पीढ़ी की बुरी उम्मीदों को दर्शाता है (मत्ती १२:३९ए)। मौखिक ब्यबस्था (Ei – मौखिक ब्यबस्था देखें) की उनकी त्रुटिपूर्ण स्वीकृति ने उन्हें एक सतही, आत्म-धार्मिक और कानूनी विश्वास प्रणाली में ले जाया। ग्रेट सैन्हेड्रिन (Lg – महान महासभा देखें) ने देश को गुमराह किया था।

परिणामस्वरूप, यीशु ने कहा कि ऐसा कोई संकेत नहीं दिया जाएगा (मत्ती १९:३९बी)। मसीह के लिए उस तरह का चमत्कार करना संभव नहीं था जैसा फरीसी और टोरा-शिक्षक चाहते थे – इसलिए नहीं कि उसके पास ऐसा करने की शक्ति नहीं थी, बल्कि इसलिए कि यह पूरी तरह से यहोवा की प्रकृति और योजना के विपरीत था। परमेश्वर दुष्ट लोगों की सनक को संतुष्ट करने के व्यवसाय में नहीं था, और न ही है, जिनका उसके साथ कोई संबंध नहीं है।

Eo – भविष्यद्वक्ता योना का चिन्ह मत्ती १२:३८-४१ | 3



फिर भी, प्रभु ने घोषणा की कि एक और प्रकार का
चिन्ह दिया जाएगा: भविष्यवक्ता योना का चिन्ह। येशुआ ने पहले ही संकेतों के संबंध में अपनी नीति बदल दी थी (देखें En – मसीह के मंत्रालय में चार कठोर परिवर्तन)। तो इस नई नीति के परिणामस्वरूप, उन्होंने अब कहा: जैसे योना तीन दिन और तीन रात व्हेल के पेट में था (योना At – योना की प्रार्थना पर मेरी टिप्पणी देखें), इसलिए मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन रात रहेगा पृथ्वी के हृदय में तीन रातें (मत्ती १२:३९सी-४०)। परमेश्वर ने योना को अंधकार और मृत्यु से निकालकर प्रकाश और जीवन में लाया। योना का अनुभव मेशियाच के आने वाले दफन और पुनरुत्थान का एक स्नैपशॉट था। येरूशलेम के धार्मिक नेता इस दृष्टांत को नहीं समझेंगे, लेकिन आस्थावान लोग समझेंगे।

योना के जीवन से अपने चित्रण को जारी रखते हुए, मसीह ने योना के संदेश के प्रति बुतपरस्त नीनवे के लोगों की प्रतिक्रिया की तुलना फरीसियों और टोरा-शिक्षकों की प्रतिक्रिया से की। अपनी सबसे तीखी फटकार में, नाज़रीन ने स्वयं धर्मी यहूदी नेताओं से कहा, जो सोचते थे कि वे परमेश्वर के लोगों की उपज का मलाईदार हैं, कि नीनवे के लोग इस पीढ़ी के साथ न्याय के समय खड़े होंगे और इसकी निंदा करेंगे; क्योंकि उन्होंने योना के उपदेश से मन फिराया, और अब योना से भी बड़ी कोई वस्तु यहां है (मत्ती १२:४१)।

नीनवे के दुष्ट और मूर्तिपूजक अश्शूरियों को परमेश्वर का संदेश सुनाने में योना की अनिच्छा के बावजूद, जब भविष्यवक्ता ने आखिरकार प्रचार करना शुरू किया, हाशेम ने एक अद्वितीय प्रतिक्रिया दी: नीनवे के लोगों ने परमेश्वर पर विश्वास किया। उपवास की घोषणा की गई और बड़े से लेकर छोटे तक सभी ने टाट ओढ़ा। जब योना की चेतावनी नीनवे के राजा तक पहुँची, तो वह अपने सिंहासन से उठा, अपने शाही वस्त्र उतार दिए, टाट से ढँक लिया और धूल में बैठ गया (योना ३:५-६)। अपने आप को टाट से ढकना और धूल में बैठना पाप के लिए सच्चा दुःख और पश्चाताप दिखाने का उनका तरीका था। जब परमेश्वर ने देखा कि उन्होंने क्या किया और वे किस प्रकार अपने बुरे मार्ग से फिर गए, तो वह पछताया और उन पर वह विनाश नहीं लाया जिसकी उसने धमकी दी थी (योना ३:१०)।

नीनवे के लोग न केवल अन्यजाति थे, और यहोवा की वाचा या टोरा का कोई हिस्सा नहीं

Eo – भविष्यद्वक्ता योना का चिन्ह मत्ती १२:३८-४१ | 4

थे, बल्कि बुतपरस्त मानकों के अनुसार भी विशेष रूप से दुष्ट और क्रूर थे। वे प्रभु या उसकी इच्छा को नहीं जानते थे, तथापि, उनके सच्चे पश्चाताप से उन्हें छुटकारा मिल गया, और भविष्यवक्ता के कठोर संदेश की घोषणा के अनुसार विनाश से बच गए: चालीस दिन और नीनवे को उखाड़ फेंका जाएगा (योना ३:४)। योना ने कोई चमत्कार नहीं किया और मुक्ति का कोई वादा नहीं किया; हालाँकि, विनाश के उनके संक्षिप्त संदेश के आधार पर नीनवे के लोगों ने खुद को प्रभु की दया पर छोड़ दिया और बच गए।

दूसरी ओर, इज़राइल ईश्वर के चुने हुए अनुबंधित लोग थे, जिन्हें उनकी टोरा, उनके वादे, उनकी सुरक्षा और उनके विशेष आशीर्वाद दिए जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, जिनकी सूची इतनी अधिक नहीं है। फिर भी उसके लोग पश्चाताप नहीं करेंगे और अपने पाप से पीछे नहीं हटेंगे, तब भी जब यहोवा के अपने पुत्र, जो योना से भी महान थे, ने उन्हें नम्रता और दयालु प्रेम का उपदेश दिया, तीन मसीहाई चमत्कार किए, और स्वर्ग में उनके साथ परमेश्वर की क्षमा और अनन्त जीवन की पेशकश की। फिर भी, उसके चुने हुए लोगों ने उससे मुंह मोड़ने का फैसला किया। और इसके लिए वे फैसले पर पूर्व बुतपरस्तों की निंदा के तहत खड़े होंगे (प्रकाशित वाक्य पर मेरी टिप्पणी देखें Fo – महान श्वेत सिंहासन निर्णय)।

तानाख में संकेत शब्द का प्रयोग कई बार किया गया है; यशायाह ने ११ बार इसका उपयोग किया। जब हम इन सभी अंशों को देखते हैं तो हम देखते हैं कि इसका उपयोग तीन अलग-अलग तरीकों से किया जाता है। सबसे पहले, इसका उपयोग स्वर्गीय पिंडों के अर्थ में किया जाता है; तारों का उपयोग नेविगेशन के लिए किया जाता है (उत्पत्ति १:१४)। दूसरे, इसका प्रयोग सकारात्मक प्रमाण के अर्थ में किया जाता है। चमत्कारी नहीं, केवल सकारात्मक प्रमाण। यहाँ परमेश्वर मूसा से बात करते हुए कहता है: मैं तुम्हारे साथ रहूंगा। और तुम्हारे लिये यह चिन्ह होगा, कि मैं ही ने तुम्हें भेजा है: जब तुम लोगों को मिस्र से निकालोगे, तब इसी पहाड़ पर परमेश्वर की आराधना करना। (निर्गमन ३:१२) अब यह अपने आप में कोई चमत्कार नहीं है, लेकिन इसने सकारात्मक प्रमाण की भावना के रूप में काम किया है। तीसरा, इसका प्रयोग चमत्कारी के अर्थ में भी किया जाता है (निर्गमन ४:६-९)। तानाख में एक चिन्ह के साथ कई लोग जुड़े हुए थे।

इब्राहीम ने एलीआजर को अपने पुत्र इसहाक के लिए अपने लोगों में से दुल्हन ढूँढ़ने के लिए भेजा। उनके प्रधान सेवक को सही का पता कैसे चलेगा? इब्राहीम ने अपना सारा विश्वास यहोवा पर रखा था, और उसके सेवक ने भी वैसा ही किया जैसा उसने तत्परता से प्रार्थना की: हे यहोवा, मेरे स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर, आज मुझे सफलता दे, और मेरे स्वामी इब्राहीम पर दया कर। देख, मैं इस सोते के किनारे खड़ा हूं, और नगरवासियों की बेटियां पानी भरने को बाहर आ रही हैं। अजनबियों के प्रति आतिथ्य सत्कार की परंपरा के कारण, वह जानता था कि लगभग कोई भी महिला उसे पानी पिलाने के लिए सहमत होगी। लेकिन क्या होगा यदि वह स्वेच्छा से उसके दस प्यासे ऊँटों को पानी पिलाने की पेशकश करेगी? उसने एक विशिष्ट चिन्ह माँगने का निश्चय

Eo – भविष्यद्वक्ता योना का चिन्ह मत्ती १२:३८-४१ | 5

किया।

एलीआजर ने सोचा, ऐसा हो कि जब मैं उस से कहूं, अपना घड़ा नीचे कर कि मैं पीऊं, तो वह कहे, पी ले, और मैं तेरे ऊंटों को भी पानी पिलाऊंगी। अतिरिक्त मील जाने और दस ऊँटों को भी पानी पिलाने की उसकी इच्छा, उसके चरित्र के बारे में बहुत कुछ कहती है, क्योंकि ऊँट भारी मात्रा में पानी पीते हैं। इसलिये वह प्रार्थना करता रहा, कि यह वही हो जिसे तू ने अपने दास इसहाक के लिये चुन लिया है। मुख्य सेवक को एहसास हुआ कि यह दुल्हन पूर्वनिर्धारित थी। इस संकेत से मुझे पता चल जाएगा कि आपने मेरे स्वामी पर दया की है (उत्पत्ति पर मेरी टिप्पणी देखें Fy– मेरे स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर, आज मुझे सफलता दें)।

सवक ने वही किया जो गिदोन एक हजार साल बाद करेगा, एक ऊन बाहर निकाला। इसने उसके लिए काम किया, लेकिन इसे घर पर न आज़माएँ! यह परमेश्वर के लोगों के लिए उसकी इच्छा निर्धारित करने का सबसे अच्छा तरीका नहीं है, क्योंकि हम परमेश्वर को पूरा करने के लिए जो शर्तें रखते हैं, वह शायद उसकी इच्छा में नहीं होती हैं। यहाँ ऐसा ही हुआ, लेकिन हो सकता है कि हम आस्था से नहीं बल्कि दृष्टि से चल रहे हों, और हम अंततः ईश्वर को लुभाने में सफल हो सकते हैं। यदि हम यहोवा को पट्टे पर रखने और उसे एड़ी पर बुलाने की कोशिश करते हैं, तो हम दुखद रूप से निराश होंगे। भजनहारों की साहसिक प्रार्थनाओं के विपरीत, जो ईश्वर को ईश्वर होने के लिए कहते हैं, ऊन निकालना चालाकीपूर्ण हो सकता है क्योंकि हमें लगता है कि हम निर्णय ले रहे हैं। तथ्य यह है कि प्रभु कभी-कभी कृपालु होते हैं और हमारी कमजोरियों और अज्ञानता को समायोजित करते हैं, यह उनकी कृपा का प्रदर्शन है, न कि ईश्वर की भूमिका निभाने का लाइसेंस। वह हमारी इच्छाओं का जवाब देने के लिए बाध्य नहीं है। हमारे पास बड़ी तस्वीर नहीं है. वह करता है।

ईश्वर से चमत्कारी संकेत पाने में गिदोन की स्पष्ट आस्था की कमी उस व्यक्ति के लिए अजीब लगती है जो विश्वास के हॉल में सूचीबद्ध है (इब्रानियों ११:३२)। वास्तव में, गिदोन को उसकी नियुक्ति के समय पहले से ही यहोवा से एक संकेत मिला हुआ था (न्यायियों ६:१७ और २१)। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि गिदोन ऊन का उपयोग परमेश्वर की इच्छा की खोज के लिए नहीं कर रहा था, क्योंकि वह पहले से ही दिव्य रहस्योद्घाटन से जानता था कि परमेश्वर उससे क्या करना चाहता था (न्यायियों ६:१४)। हाथ में लिए गए कार्य के लिए उसकी उपस्थिति या सशक्तिकरण की पुष्टि या आश्वासन से संबंधित संकेत। परमेश्वर ने गिदोन के कमजोर विश्वास को स्वीकार कर लिया और ऊनी ऊन को ओस से भिगो दिया, इतना कि गिदोन बेहोश हो गया। . . एक कटोरा पानी. शायद गिदोन के मन में अपनी संरचना की विशिष्टता के बारे में दूसरा विचार था, इसलिए उसने इसके विपरीत अनुरोध किया। उस रात परमेश्वर ने वैसा ही किया. केवल ऊन सूखा था और चारों ओर की भूमि ओस से ढकी हुई थी (न्यायियों ६:३६-४०)। इस प्रकार आश्वस्त होकर, गिदोन ने अपना कार्य जारी रखा।

Eo – भविष्यद्वक्ता योना का चिन्ह मत्ती १२:३८-४१ | 6

अपने विश्वास को मजबूत करने के साधन के रूप में, भविष्यवक्ता यशायाह ने राजा आहाज से बात करते हुए कहा: अपने परमेश्वर यहोवा से एक चिन्ह मांगो। यह एक प्रत्यक्ष चमत्कार होगा जो परमेश्वर के कहे गए वचन की पुष्टि करेगा। राजा अपने मन की इच्छानुसार कोई भी चमत्कार चुन सकता था, चाहे वह सबसे गहरी गहराइयों में हो या सबसे ऊँची ऊँचाइयों पर (यशायाह ७:१०-११)। जिस तरह से यहां संकेत शब्द का उपयोग किया गया है, संकेत का संदर्भ आहाज में विश्वास पैदा करना था (और आहाज के बारे में हम जो जानते हैं उससे चमत्कार होगा)। परन्तु आहाज ऐसा कोई चिन्ह नहीं चाहता था। क्यों? क्योंकि वह अपने और अपने राष्ट्र दोनों के भाग्य पर असीरिया पर भरोसा करने वाला था। यशायाह द्वारा प्रदान किया गया कोई भी संकेत उसके लिए केवल शर्मिंदगी ही होगा, इसलिए उसने धर्मपरायणता की अपील के साथ दुविधा से बचने का प्रयास किया (यशायाह पर मेरी टिप्पणी देखें Ca – एक संकेत के लिए अपने परमेश्वर से पूछें)।

जब हेजेकिहा ने उसके ठीक होने और पंद्रह अतिरिक्त वर्षों के जीवन की भविष्यवाणी की थी, तब हिजकिय्याह ने एक चिन्ह माँगा था। भविष्यवक्ता ने उसे वह संकेत दिया जो उसने सूर्य द्वारा डाली गई छाया को आगे की बजाय दस कदम पीछे जाने के लिए कहा था (यशायाह पर मेरी टिप्पणी देखें Gy – हिजकिय्याह बीमार हो गया और मृत्यु के बिंदु पर था)।

संकेत मांगने या ऊन रखने में एक समस्या यह है कि इसमें इस बात पर ध्यान नहीं दिया जाता है कि हमारी स्थिति वास्तव में तानाख में मौजूद लोगों के साथ तुलनीय नहीं है। विश्वासियों के रूप में, हमारे जीवन में सुधार और आश्वासन के लिए हमारे पास दो शक्तिशाली उपकरण हैं जिनकी उनमें कमी थी। सबसे पहले, हमारे पास परमेश्वर का पूरा वचन है जिसे हम जानते हैं कि वह परमेश्वर द्वारा रचित है और धार्मिकता में सिखाने, डांटने, सुधारने और प्रशिक्षण के लिए उपयोगी है, ताकि परमेश्वर का सेवक हर अच्छे काम के लिए पूरी तरह से तैयार हो सके (दूसरा तीमुथियुस ३:१६-१७). यहोवा ने हमें आश्वासन दिया है कि जीवन में किसी भी चीज और हर चीज के लिए पूरी तरह से सुसज्जित होने के लिए हमें केवल उनके वचन की आवश्यकता है।

दूसरे, हमारे पास रुआच हाकोदेश है, जो स्वयं ईश्वर है, जो हमारा मार्गदर्शन, निर्देश और प्रोत्साहन करने के लिए हमारे हृदय में निवास करता है। सप्ताहों के पर्व और चर्च के जन्म से पहले, तानाख के धर्मी लोगों के पास परमेश्वर का वचन था और उनके संभावित हाथ से निर्देशित किया गया था। लेकिन अब हमारे पास उनके पूर्ण धर्मग्रंथ और हमारे दिलों में उनकी वास करने वाली उपस्थिति है।

संकेतों की तलाश करने या दिखावा करने के बजाय, हमें हर स्थिति में हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा को जानकर संतुष्ट होना चाहिए। इस संबंध में हमारा मार्गदर्शन करने के लिए रब्बी शाऊल हमें तीन धर्मग्रंथ देते हैं। पहला: मसीहा का वचन अपनी संपूर्ण समृद्धि के साथ आप में वास करें, जब आप एक-दूसरे को पूरी बुद्धिमत्ता से

Eo – भविष्यद्वक्ता योना का चिन्ह मत्ती १२:३८-४१ | 7

सिखाते और सलाह देते हैं, और अपने दिलों में ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के साथ भजन, भजन और आध्यात्मिक गीत गाते हैं (कुलुस्सियों ३:१६).

दूसरी बात: सदा हर्षित रहो। नियमित प्रार्थना करें. हर बात में धन्यवाद करो, क्योंकि परमेश्वर तुम से जो मसीह यीशु के साथ एक हो गए हो, यही चाहता है (१ थिस्स ५:१६-१८)।

तीसरा: और जो कुछ तुम करो या कहो, प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमपिता परमेश्वर का धन्यवाद करो (कुलुस्सियों ३:१७)।

यदि ये चीजें हमारे जीवन की विशेषता हैं, और परिपक्व विश्वासियों से ईश्वरीय परामर्श, हम जो निर्णय लेते हैं वह ईश्वर की इच्छा के अनुसार होंगे, वह हमें अपनी शांति और आश्वासन के साथ असीम आशीर्वाद देगा, और संकेत मांगने या लगाने की कोई आवश्यकता नहीं होगी एक ऊन बाहर.